दिव्य प्रेरणा के स्रोत थे प्रजापिता ब्रह्मा

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा एक साधारण आत्मा के रूप में जन्म लेकर अपने कर्म व चरित्र से लाखों मनुष्य आत्माओं को अपने अन्दर छिपे सुषुप्त शक्तियों को जागृत कर देव समान बनने की प्रेरणा दी। इस विषय सागर में बुराईयों तथा आसुरी प्रवृत्तियों की आंधियों से लड़ते हुए अच्छाईयों को उजागर कर एक नये विश्व की परिकल्पना को साकार करने की रोशनी प्रदान की। बाबा ने भक्तों की श्रद्धा को महत्त्व देते हुए उन्हें अपनी व दूसरों की सही पहिचान दी। अपनी कर्म कुशलता तथा श्रेष्ठ कौशल से युवावस्था में एक प्रसिद्ध हीरे जवाहरात के व्यापारी बन गये। इतने बड़े व्यापारी होते हुए भी नम्रता, सेवाभाव, विश्व वसुधैव कुटुम्बकम को अपने जेहन से दूर नहीं होने दिया। परन्तु 60 साल की आयु होते-होते दादा को इससे मन की तृप्ति नहीं हुई और वे इस हीरे के धन्धे को छोड़ मानव मात्र के अन्दर छिपे सच्चे हीरे को उजागर करने का धन्धा शुरू कर दी।

हैदाराबा सिन्ध में सन् 1937 में 60 साल की आयु में ईश्वरीय शक्ति ने इन्हें नयी एक श्रेष्ठ दुनियां (जहां दु:ख का नामोनिशान न हो) का साक्षात्कार कराकर उसके स्थापना के लिए प्रेरित किया तथा दादा लेखराज से नाम परिवर्तित कर 'प्रजापिता ब्रह्मा' का नामकरण किया। उन्होंने इस महान तथा कल्याणकारी कार्य को अन्जाम देने के लिए इसकी शुरूआत एक 'ओम मण्डली' से किया। इतिहास इसका साक्षी है कि जब भी आसुरी राज्य में दैवी सम्राज्य का कार्य हुआ तब-तब आसुरी शक्तियों ने इसका विरोध किया। यही सब कुछ बाबा के साथ भी घटित हुआ। कई बुरे लांछन लगाये गये, श्रद्धालु माताओं-बहनों तथा अन्य लोगों पर बन्धन डाले गये, गलत सुचनायें फैलायी गयी परन्तु ईश्वरीय शक्ति साथ होने के कारण ये सब निष्फल रहा। इस कार्य के लिए उन्होंने किसी भी धर्म, सम्प्रदाय की अवहेलना नहीं की सभी को सम्मान दिया तथा इस विश्व के नव निर्माण में एकता, अखण्डता, विश्व वसुधैव कुटुम्बकम की स्थापना में सहयोगी बनने की सलाह दी। भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद ईश्वरीय शक्ति के निर्देशानुसार ऋषियों की तपस्वी भूमि, अरावली पर्वत मालाओं के बीच 'माउण्ट आबू' एक ऐसे स्थान का चयन किया जहाँ से पूरे विश्व में इस ज्ञान प्रकाश अवलोकित किया जा सके। यह संस्था एक शैक्षणिक रूप में मनुष्यों को राजयोग सिखाकर उनके अन्दर नैतिक मूल्यों का समावेश कराने का एक अद्भूत कार्य करने लगी जिसके आधार पर यह संस्था प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नाम से प्रसिद्ध हुई।

प्रजापिता ब्रह्मा ने माताओं-बहनों के कोमल स्वभाव तथा आन्तरिक शक्ति को महत्त्व और सम्मान देकर विश्व परिवर्तन में निमित्त बनाकर आगे बढ़ाया तथा उन्हें अपने शक्ति स्वरूप का एहसास कराकर निर्भय तथा कार्य कुशलता प्रदान की। सादगी तथा पवित्रता की आधारशिला स्थापित कर इसकी मशाल लेकर जन-जन को पवित्रता की शक्ति का महत्त्व समझाकर उस राह पर चलने की प्रेरणा दी। बाबा ने हर एक मनुष्यात्मा को सुख-शान्ति प्रदान करने के लिए इस मायावी दुनियां के फुसलाने वाले वैभवों से दूर रहने की प्रेरणा दी। तथा इस दुनियां से दु:ख, अशान्ति, पाप, अत्याचार, भ्रष्टाचार मुक्त बनाकर श्रेष्ठ तथा दैवी सम्राज्य स्थापना के कार्य के लिए प्रेरित किया। प्रजापिता ब्रह्मा में दिव्य अवतरण की उपस्थिति थी। उन्होंने सर्व धर्म एवं आध्यात्मिक विद्याओं से परे राजयोग की श्रेष्ठ विधि द्वारा बुरे व्यक्तियों को अच्छे में परिवर्तन किया। फैशन से भरपूर जीवन एवं भोग के वश असभ्य अनात्मवाद के उपयोग रूपी देह अभिमान और तामसिक आदतों से छुड़ाना तथा मांसाहार वा नशीले पदार्थो से बचाना। मनुष्य की स्मृति के दिव्य

जीवन के प्रभावशाली स्तर तक उठाना, देह अभिमान से परिवर्तन कर आत्म जागृति लाना जो कि पापों से मुक्त होने का मार्ग है। जिसके द्वारा ही मानव-मात्र आन्तरिक आत्मा के सत्य स्वरूप को प्राप्त कर सकते है। दादा लेखराज स्वंय सारी मानवता के दिलों का सर्जन बन गये और चाकू के वजाए ज्ञान से कब्रदाखिल दिव्यता को फिर से जागृत कर दिया। ऐसे महापुरूष, जिन्होंने आध्यात्मिक नीति एवं वैज्ञानिक विधि को आपनाया, को महान क्रान्तिकारी भी कह सकते हैं। वे लम्बी आयु वाले थे, सारे वैभवों का त्याग कर छोटी सी शुरूआत से विश्व भर में उन्होंने अपना प्रभुत्व स्थापन किया। अपने उन्नत विश्वास से, शान्ति की शक्ति से एवं अपनी साकार उपस्थिति से सभी की पालना की तथा घृणा को, विपत्तियों को एवं हिंसक लहरों को पराजित किया।

इस विश्व परिवर्तन के विशाल कार्य की मशाल लेकर आगे बढ़ते रहे तथा स्वउन्नति के लिए भी अपने अन्दर दैवी गुणों को आत्मसात करते हुए राजयोग के माध्यम से सम्पूर्णता को प्राप्त कर 18 जनवरी, 1969 में अपने नश्वर शरीर का त्याग किया। परन्तु आज भी वह सूक्ष्मवतनवासी बनकर फरिश्ते रूप से पूरी दुनियां में दुख, दर्द से कराहती तथा इस सत्य पथ पर अनुगामी करोडो मनुष्य आत्माओं को ईश्वरीय शक्ति और साहस प्रदान कर रहे हैं। पवित्रता तथा सादगी इस संस्था की नींव है, पवित्रता को प्रथम महत्व देते हुए यह संस्था एक छोटे बीज से आज एक विशाल वट वृक्ष का रूप ले चुकी है और पूरे विश्व के 90 देशों में 7 हजार सेवाकेन्द्रों के माध्यम से संसार से दु:ख, अशान्ति मिटाने, एकता, अखण्डता, भेदभाव रहित, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना स्थापित करने तथा सुख, शान्ति और समृद्धि से भरपूर अमन चैन की गंगा बहाने के लिए सतत् प्रयत्नशील है।

बाबा ने हर एक मनुष्य आत्मा को बिना जाति-पाति, रंग भेद, धर्म भेद, भाषा भेद को देखे उसमें छिपी अमर अजर अविनाशी आत्मा को उसके परमपिता परमात्मा का रास्ता बताने का भरसक प्रयास किया तथा उसमें विश्व पिता की भांति प्यार दिया। आज उनकी पालना में पले लाखों श्रद्धालु उनके स्मृति दिवस पर पूरे विश्व में मानसिक, शारीरिक तथा प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित लोगों को अपनी मनोयोग से सुख तथा शान्ति की कामना करेगे।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com